International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(2): 166-169
Received: 05-08-2022
Accepted: 06-10-2022

डॉ. चन्द्रशेखर
एसोसिएट प्रोफेसर, पी.जी. इतिहास विभाग, सर छोटूराम राजकीय महिला महाविद्यालय सापला, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. चन्द्रशेखर
एसोसिएट प्रोफेसर, पी.जी. इतिहास विभाग, सर छोटूराम राजकीय महिला महाविद्यालय सापला, हरियाणा, भारत

मध्यकालीन पश्चिमी राजस्थान में मल्लिनाथ का लोक देवता के रूप में उत्कर्ष का ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ. चन्द्रशेखर

सारांश
मल्लिनाथ मध्यकालीन पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख लोक देवता के रूप में विख्यात हुए । वे कोई पौराणिक देवता नहीं थे, अपितु राठौर वंशी स्थानीय शासक थे जिन्होंने अपनी वीरता और सैनिक कुशलता के बल पर अपनी राजपूती अस्मिता को दृढता से स्थापित किया जब अपने पैतृक भू भाग को पुनः अधीन किया । मल्लिनाथ ने महेला के आसपास के क्षेत्रों को जीत राठौर की सत्ता को सुरक्षित एवम सुदरढता प्रदान की । परन्तु मल्लिनाथ ने राजपूती परम्परा का – युद्ध एवम् लूटमारी गतिविधियों का त्याग कर, अपना जीवन निम्न वर्गों की समाजिक समानता के लिए, उनके हितार्थ के लिए जो कार्य किये, उनसे मल्लिनाथ को लोक देवता का दर्जा दिया गया द्य उनके स्थलो पर मेलो का आयोजन होने लगा। यह एक नई पंथीय धार्मिकता के ऊभार का संकेत था ।

कुटशब्दः भाई बाँट, रावल, महेवा, नाथ, शाक्त, पौराणिक

प्रस्तावना
पश्चिमी राजस्थान के क्षेत्र में मल्लिनाथ को प्रमुख लोकदेवी देवताओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। उन्हें एक प्रतिष्ठित स्थानीय लोक देवता के रूप में न केवल पूजा जाता है अपितु उनकी याद में तिलवाडा (बाडमेर) में एक भव्य पशु मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी वर्गों के लाग बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं।[1] मल्लिनाथ कोई पौराणिक परम्परा से जुडे लोक देवता नहीं है अपितु ये राजपूत वंशी–राठौर शाखा के स्थानीय प्रभावशाली शासक थे जो अपने वीरता के कारनामों से स्थानीय स्तर पर वीर शासक के रूप में प्रसिद्ध हुये तथा उनके पंथीय धार्मिक मूल्यों के लिए एक लोक देवता का दर्जा के कारनामों तथा लोक देवता के रूप में उत्कर्ष के सम्बंध में पूर्णता जानकारी के ऐतिहासिक प्रमाण सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है तथा हमें इनके जीवन प्रसंगों से जुड़े लोककथाओं, बातों से जुड़े प्रसंगों की सहायता से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।
मल्लिनाथ का संबंध राठौरों की प्रतिष्ठित शाखा साखला से था जो पश्चिमी राजस्थान के क्षेत्र में राठौरों की सत्ता विस्तार में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे। यह पश्चिमी राजस्थान में राज्य निर्माण के लिए विभिन्न राजपूती वंशों के बीच निर्णायक संघर्ष का काल था। मल्लिनाथ के पिता स्थानीय भूमिका थे तथा इनका जनम 1358 ई. के आस पास बताया जाता है।[2] परम्परा के अनुसार ये किसी तपस्वी के आर्शीवाद से पैदा हुय तथा जब ये 12 वर्ष के थे उनके पिता का देहान्त हो गया एवम् इनके चाचा के द्वारा इनकी जागीर को अपने अधीन कर लिया गया। अन्ततः इनको अपने चाचा के अधीनता स्वीकार करनी पड़ी जिनका महेवा के क्षेत्र पर प्रभावशाली अधिकार था। इनके चाचा कान्हदेव ने इन्हें अपनी सेवा में लिया गया तथा इन्होंने अपनी वीरता एव शासन की कुशलता से अपने को प्रभावशाली पराक्रमी राजपूत के रूप में जल्द ही स्थापित कर लिया।[3] परन्तु राजपूती मूल्यों–मान्यताओं के अनुसार (भाई बाट प्रणाली के अनुरूप) उसने अपने पैतृक क्षेत्र को प्राप्त करने की कोशिश जारी री तथा वह उचित समय एवम् अवसर की तलाश में था। चूंकि भाई बाट प्रणाली के अनुसार मल्लिनाथ को अपने पैतृक स्थल पर वंशानवंशागत दावा व स्वतंत्र राजपूती पहचान जुड़ी थी, जबकि कान्हडदेव के चाकर के रूप में राजपूती पहचान धूमिल होने का खतरा था।[4] मल्लिनाथ ने अपनी शक्ति का विस्तार पर कान्हडदेव को स्वीकार करना पड़ा।[5] अपना पैतृक स्थल प्राप्ति वास्तव में भाई बाट प्रणाली को प्रतिष्ठ कर, अपनी राजपूती पहचान को पुष्ट करना था। तत्पश्चात् मल्लिनाथ ने आसपास के क्षेत्रों के दूसरे ठिकारेदारों पर आक्रमण कर, अपनी सत्ता को विस्तार दे, माली क्षेत्र में राठौरा सत्ता को मजबूती दी जिसमें जालौर के मुस्लिम स्थानीय ठिकानेदार को भी हराया गया। मल्लिनाथ ने वाव्त में महेवा (माली) क्षेत्र में राठौर सत्ता को मजबूती दी तथा पहली बार रावल की उपाधि धाराण की।[6]
इस प्रकार महेवा को केन्द्र बना, मल्लिनाथ ने अपनी वीरता की छवि को प्रतिष्ठित किया। 1374 से 1378 ई. तक वह अपने लूटमारी विजयी अभियानों को मडोंर, सिंध, आबू तक ले गया व 14 दलों की बड़ी टुकड़ी, मालवा के सेबुदार–निजामुद्दीन को भी हराने में सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार मल्लिनाथ ने राठौरों के प्रतिद्वंद्वी सभी दूसरे स्थानीय शासकों को शक्तिहीन कर दिया गया।[7]

राठौर सत्ता से संसम्बद्धता

मल्लिनाथ द्वारा महेवा में अपनी शक्ति के सुदृढ़ीकरण को मारवाड के क्षेत्र में विस्तार पाती, राठौर के राज्य निर्माण से जोडा कर देखा जाता है जिससे इस क्षेत्र में राठौर के आपसी सत्ता संघर्ष को दूर कर दिया तथा राठौर बाद में मारवाड क्षेत्र में स्वतंत्र राज्य की स्थापना करा पाये। जैसे मल्लिनाथ ने स्वयं अपने पराक्रमी, वीर कार्यों को राठौर के राज्य निर्माण के कार्य का नेतृत्व कर रहे राव चूडां (जो उन का भतीजा था) को समर्पित किया व राठौर सत्ता को प्रमुखता तक पहुंचाया। महेवा में किसी अन्य प्रतिद्वंद्वी को भी मल्लिनाथ ने पनपने नहीं दिया तथा चूड़ा को 1394 में मडोर, नागौर के क्षेत्रों को जीतने में सहायता दी। इस प्रकार पश्चिमी राजस्थान में राठौर राज्य के निर्माण को सुदृढ़ता प्रदान करने में मल्लिनाथ ने बड़ी भूमिका निभाई थी। बाद में अपने जीते क्षेत्रों के महत्वपूर्ण सामरिक महत्त्व के ठिकानों– सिवाना, खंड, ओसिया की जागीरें भी राठौरों में वितरित कर दी।[8] यह उनका कदम अविश्वसनीय था।

राजपूती मूल्यों का त्याग – पंथीय विचारधारा से जुड़ाव

मल्लिनाथ ने राठौर सत्ता के सुदृढ़ीकरण में राजपूती मूल्यों परम्परा का निर्वाह किया तथा अपनी योग्यता सिद्ध की, परन्तु उनके जीवन का निर्णायक मोड था, राजपूती परम्परा – श्युद्ध के लिये हथियारों को त्याग करताश तथा धीरे–धीरे गैर ब्राह्मणवादी विचारधारा के पंथीय विचारों–नाथ, कूडापथ आदि की ओर आकर्षित होना। ज्ञात होता है कि इनकी पत्नी रूपांदे नाथ योगी उगमसी भाटी की शिष्या थी तथा उसके प्रभाव से मल्लिनाथ योग, नाथपंथ की ओर झुके।[9] राव मल्लिनाथ द्वारा मारवाड के सन्तों को आमंत्रित कर एक भव्य हरि कीर्त्तन संगोष्ठि का भी आयोजन करवाया गया था[10] तथा मल्लिनाथ के निम्न वर्गों जाति से बहिष्कृत लोगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध थे। तथा इन वर्गों के लिये उन्हें सूखा व अकाल के समय जलाशायों कुओं का प्रबन्ध किया गया था तथा उनके रक्षार्थ कृपा दृष्टि के कारनामें दिल्ली के सुल्तानों तक प्रसिद्ध थे।[11] निम्न वर्गों के साथ जोड़ने में इनकी पत्नी रूपादें की विशेष भूमिका था। इस प्रकार धीरे–धीरे मल्लिनाथ परम्परावादी राजपूती व्यक्तित्त्व से निम्न वर्गों के उद्धारक, जाति प्रथा के कठोर आलोचक तथा गैर ब्राह्मणवादी (कट्टर विचारधारा का त्याग कर) पंथों के संरक्षक बने । उनकी ख्याति त्यागी सिद्ध पुरुष, भविष्य दृष्टा के रूप में होने लगी। अपने महेवा के क्षेत्र को पुत्र को सौंप वे वैराग्य जीवन की आकर्षित हुये ओर तथा 1399 में योगी रूप में प्राणों का त्याग किया।[12] इनके अनुयायियों द्वारा उनके वचनों, उनके कार्यों के चारों ओर एक लोकवादी धार्मिकता को जन्म दिया तथा निम्न वर्गों के लोगों के जुड़ने से यह परंपरा सुदृढ़ हुई।

मल्लिनाथ जी के ऐतिहासिक जीवन व कार्यों तथा उनसे जुड़ी धर्म की मान्यता के बारे में दो पक्ष उद्घाटित होते है। प्रथम उनके राजपूती धर्म का निर्वाह करते वीर का जो अपने कुल, वंश के सुदृढ़ीकरण के लिये संघर्षों में जुड़ा था। दूसरा नाथ पंथ भक्ति की धारा के प्रवर्त्तक के रूप सन्त सिद्ध भविष्यदृष्टा महापुरुष का तत्कालीन जीवन से जुड़े प्रसंग इस रूपान्तरण पर अधिक प्रकाश नहीं डालते। कुछ इतिहासकार इसे निम्नवर्ग से सन्त महात्मा के रूप में देखते हुये, इन्हें दैव्यता का दर्जा दे उनका भक्ति भावना से जुड़ा हुआ बताते है।[13]

परन्तु मल्लिनाथ के इन रूपों में श्ख्याति कोश तत्कालिन सन्दर्भ में देखना होगा। निसन्देह मल्लिनाथ एक वीर राजपूती योद्धा थे। जैसा कि ख्यातों में दिखाया है। पश्चिमी राजस्थान में मल्लिनाथ के काल तक राठौड़ों की सत्ता किसी रूप में सुदृढ़ स्थायी नहीं हुई थी। राठौड़ो को दूसरे राजपूती वंशों की प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ रहा था तथा स्थानीय स्तर पर इनके वंश के ठिकानेदार अधिक नहीं थे । राव सीहा पुत्र आसनाथ के नेतृत्व में पाली, खेड़ के क्षेत्रों पर इनका अधिकार था परन्तु राठौड अभी भी श्रावश की उपाधि तक सीमित थे।[14] जो इंगित करता है कि राठौर प्रमुख राजपूती कुलों में नहीं गिने जाते थे तथा अनेक क्षेत्र जो मारवाड़, जोधपुर राज्य का बाद में आधार बने मंडोर व महेवा राठौड़ों की सीमाओं से बाहर थे। दूसरी ओर सत्ता का पारिवारिक संघर्ष भी राठौड़ो के बीच व्याप्त था।[15]

एक राजपूती योद्धा के रूप में मल्लिनाथ जी ने द्वारा राजपूती धर्म, मूल्यों के अनुसार कार्य किये गये। राजपूती पहचान के रूप में ठिकानेदार के रूप में अपने चाचा कान्हड़ से ऐनकेप्रकेन प्राप्त किया।[16] अपने कुल के प्रभाव को बढ़ाने के लिये लूटमारी गतिविधियों को गुजरात सिंध तक विस्तार दिया तथा राव चूडां की सहायता कर मण्डोर को राठौरों का स्थायी नियमित केन्द्र बनवाया। भाईबाट प्रणाली का निर्वाह कर विजित क्षेत्रों पर वंश के लोगों को बराबर की जागीर प्रदान की। उन्हीं के अधीन महेवा में राठौरों की स्वतन्त्र सत्ता के प्रदान करने के लिये 'रावल' उपाधि प्राप्त करने में सफलता पाई जो बाद में राठौर सत्ता की मजबूत की आधारशीला बनी। ये सभी राजपूती धर्म निर्वाह करने वाले जो वंश को सुदृढ़ता प्रदान करने वाले कार्य थे। परन्तु इन कार्यों का मल्लिनाथ के सिद्ध पुरुष के रूप से कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई देता है। ये कार्य तो प्रतिस्पर्द्धा – वंश स्थानीय जनसाधारण को अधीस्थ बनाने वाले व संसाधनों पर नियंत्रण करने वाले तथा यहाँ के निम्न पशुपालक, कृषक समुदायों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव बढ़ाने वाले अधिक प्रतीत होते हैं।

वास्तव में मल्लिनाथ को निम्नवर्गों के साथ जोडने वाला व्यवहार उनके राजपूती धर्म पालन के व्यवहार को त्याग करने से जुड़ा था। तत्कालीन परिस्थितियों में राजपेती धर्म पालन व्यवहार का त्याग बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता था। जैसा कि उल्लेख हुआ है कि पश्चिमी राजस्थान की प्रतिकूल वातावरणीय परिस्थितियों का सामना करने वाले पशुपालक कृषक समुदायों का जीवन बहुत अधिक कष्टमयी होता था। इस क्षेत्र के राजपूती धर्म की परिधि में लूटमारी राजपूती गतिविधियों को यहाँ के बसे राजपूत अपने वंश के प्रभाव वृद्धि का साधन मानते थे। ले लूटमारी कार्य असहाय निम्न वर्गों के लिये और अधिक कष्टमयी सिद्ध होते थे। ऐसी परिस्थितियों में किसी राजपूत वीर द्वारा राजपूती धर्म त्याग कर वैराग्य जीवन की ओर उन्मुख होना अपना निम्नवर्गों की दृष्टि से सम्मानीय था तथा ऐसे राजपूत को उन परिस्थितियों में विशेष दर्जा प्रदान होता करते था।[17] मल्लिनाथ द्वारा यह व्यवहार परिवर्तन निम्न वर्गों के बीच उनको सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिये पर्याप्त था। दूसरी ओर मल्लिनाथ के नाथ पंथ, शाक्त पंथ से जुड़ाव भी परम्परावादी कट्अर विचारधाराओं से उनका विमुख होना दर्शाते हैं । यह भी उन्हें निम्नवर्गों से जोडने में सार्थक था । अतः मल्लिनाथ के ये सभी कार्य स्थानीय नायक के रूप में निम्नवर्गों के बीच स्थापित करने के लिए पर्याप्त थे ।

राजपूती आधिपत्य काल में जो राजपूत इनका त्याग कर (राजपूती धर्म, मूल्य) वेराग्य जीवन की ओर बढ़ता था उसे भी बहुत सम्मान का दर्जा, गैर राजपूती वर्गों में मिलना स्वाभाविक था। मल्लिनाथ का नाथपंथी, शाक्तमत की निम्नवर्गों के पथ से जुड़ने का अर्थ था निम्नवर्गों के हितों के अनुरूप व्यवहार हथियारों युद्धों का त्याग, वैराग्य सन्त जीवन निर्वाह।[18] अतः मल्लिनाथ का राजपूतीधम्म से भटकना महत्वपूर्ण कदम था।

पश्चिमी राजस्थान का प्रतिकूल पर्यावरणीय भौतिक जीवन अभाव ग्रस्त जीवन तथा राज्य निर्माण की आपदायें आदि सभी तत्वों का मिलन से मल्लिनाथ के प्रति भी निम्नवर्ग का दृष्टिकोण बदलता जान पड़ता है। ये बदलती परिस्थितियां मल्लिनाथ को सन्त सिद्ध से लोक देवता का दर्जा प्रदान करती है। मल्लिनाथ वीर योद्धा से सन्त सिद्ध पुरुष रूप में अधिक स्वीकार्य सिद्ध हुये। मेघवाल, भाम्भी निम्नवर्गों के साथ उनकी पत्नी, उनका जुड़ना अपने आप

उनके स्थान पहचान को राजपूती धम्म के मूल से अलग दिखाई देता है। निम्नवर्गों के द्वारा अपने जनजातियों में उनके इसी पक्ष को सन्त, महात्मा, भविष्यवाचक को विशिष्ठता से दिखाया है। अपितु चमत्कारी रूप में अकाल (विपत्ति) काल में पानी बरसा कर जन साधारण को त्रस्तता से मुक्त करना है। उनके इन कार्यों को सुल्तान तक मानना, उनके रूप को वैधाणिकरण करना है। ऐसा आभास होता है कि उनको राजपूती धर्म के निर्वाह करने वाले कार्यों पर जोर देकर राजपूती सोच उनके गैर राजपूती पक्ष को कमतर कर छिपाने के प्रयास रहे हो । अशान्त, निरन्तर युद्धों, अराजकता के वातावरण में यह रूप और अधिक सम्मानीय हो उठता है। इनके जीवन प्रसंगों में लिखित दस्तावेजों और मौखिक–जुबानी कथा परम्पराओं में मल्लिनाथ की पत्नी रूपादे को भी इस बात का श्रेय दिया जाता दिखाया गया है कि रूपादे के प्रभाव से इन्होंने नाथपंथी तथा निम्नवर्गों के प्रति झुकाव हुआ तथा राजपूती मूल्यों का त्याग किया[19] रूपादें का मन्दिर इनके साथ ही बना हुआ है।[20] उस काल में जब मल्लिनाथ की सभी अपने सगे–संबंधियों में क्षेत्र अधिकार की स्थापना से स्थिति मजबूत थी तथा स्वतंत्र सत्ता का मार्ग प्रशस्त किया, दूसरे भाई–बंधुओं के पक्ष में त्याग करना, मल्लिनाथ के त्याग का सिद्धिकरण दर्शाता है।

यह स्पष्ट है कि अपने जीवन काल में दो विरोधाभाषी गतिविधियाँ मल्लिनाथ से जुड़ी थी। राजपूती वीरता ठिकानों को सुदृढ़ करना तथा सिद्ध पुरूष के रूप में नाथ सम्प्रदाय की ओर झुकाव तथा जनसाधारण में, उनके लोक कल्याण कार्यों से परोपकारी छवि बन चुकी थी। विशेषकर राजपूती धर्म से विमुख होना उन्हें जनसाधारण के नजदीक लाती थी। परन्तु उन्हें दैव्यत्व का दर्जा जनसाधारण की मनोदशा से जुड़ा था, जब जनसाधारण के सभी वर्गों, जातियों, धर्मों, सम्प्रदाय के लोगों ने उनमें, उनकी मृत्यु के उपरान्त पुनः स्मरण किया तथा राज्य निर्माण के बढ़ते दबाव से संसाधनों की कमी में उनका जीवन विकट त्रासदी की ओर गया, उन हालात में राजपूती शासकों के सामने सिद्ध पुरूष का स्मरण विशेषकर, वीर योद्धा द्वारा जनसाधारण के हितों का ध्यान, मल्लिनाथ की छवि को नई ऊँचाई प्रदान करने वाला था। मल्लिनाथ की कथाओं में चमत्कारों का जुड़ना ही उन्हें दैवत्व का दर्जा प्रदान करता था, धीरे–धीरे उनसे जुड़े स्थल पूजनीय के रूप में मान्य होते गये जहां सभी हिन्दू, मुस्लिम बिना भेदभाव के आराध्य देव की पूजा अर्चना से जुड़ने लगे थे। यह बदली परिस्थितियों में महत्वपूर्ण बदलाव था। यह बदली परिस्थितियाँ थी।

16– 17वीं शताब्दी में केन्द्रीकृत जोधपुर राज्य का सुदृढ़ता से मजबूत होना।[21] व इसके परिणामस्वरूप पशुपालक कृषक वर्गा पर नियंत्रण बढ़ना जो करो का बोझ था। अतः मल्लिनाथ से जुड़ा देवत्व, एक नई धार्मिकता का आगमन वास्तव में धर्म में लिपटी जनसाधारण का आक्रोश प्रतिक्रिया के रूप में जवाब था। इन प्रकार जनसाधारण निम्नवर्गों के द्वारा रुढीगत परम्परावादी मत से परे नये पथीय आवरण की नींव रखी गई तथा जो उनके जनजीवन का, उनकी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। जनसाधारण के स्तर पर गीत, कथाओं में मल्लिनाथ की यही छवि की ध्वनियाँ सुनाई देती हैं।

दूसरे निम्नवर्गीय पथों के समान मल्लिनाथ की जुड़ी धार्मिकता में कोई वंश, जाति, परिवार, धर्म का भेदभाव देखने को नहीं मिलता है। वर्तमान में सभी वर्गों से इनके अनुयायी है तथा पशुमेले में बड़े स्तर पर लेन देन होता है जो मल्लिनाथ के बने धार्मिकता के निम्नवर्गीय होने का पुष्टिगत प्रमाण है। इस प्रकार मल्लिनाथ की छवि राजपूती यौद्धा से सन्त, सिद्ध पुरुष तत्पश्चात चमत्कारी व्यक्तित्व वाले अराध्य देव की बनी, जो 17वीं शताब्दी तक बन चुकी थी। क्योंकि नैन्सी मल्लिनाथ के जीवन प्रसंगों के उल्लेख में उनके साथ चमत्कारी होने का स्पष्ट उल्लेख करते है। वर्तमान में मल्लिनाथ को तथा उनके दैव्यत्व रूप को समाज एवम् भूगोल के स्तर पर काफी विस्तार मिल चुका तथा इन्हें अवतारी पुरुष कहा जाता है व तिलवाड़ा में भव्य समारोह का आयोजन होता है। इस प्रकार मलानी तथा आसपास के क्षेत्र में लोक स्तर पर नई धार्मिकता एक छोटे रूप से आरम्भ होकर महत्वपूर्ण स्थानीय/क्षेत्रीय निम्नवर्गीय धार्मिकता के रूप में जन्म लेकर विकसित होती है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. दिनेश चन्द्र शुक्ल, राजस्थान के प्रमुख संत एवम् लोकदेवता, पृ. 139 डॉ. पेमाराम, मध्यकालीन राजस्थान के धार्मक आन्दोलन, अर्चना, अजमेर, 1972, पृ. 72–74 गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपरु, 1995, पृ. 109
2. नैणसी, मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2 (सं.) गौरी शंकर, ओझा, (अनु.) रामनारायण दूगड, राजस्थानी ग्रन्थाकार, जोधपुर, 2022, पृ. 68–69 ठाकुर नाहर सिंह जसोल, मल्लिनाथ वंश का प्रकाश, पृ. 3–4
3. ठाकुर नाहर सिंह, जसोल, वही, पृ. 6–7 नैणसी री ख्यात, पृ. 69
4. भाई बाट प्रणाली राजपूती समाज एवं राज्य व्यवस्था की संगठित करने की भूल संस्थाओं में से एक थी जो किसी राजपूत के दावे पहचान को पुष्ट करती थी। देखें विस्तार के लिए जी.डी. शर्मा राजपूत पोलिटीः ऐ स्ट्रडी आफ पोलिटिकल एण्ड एडमिनिस्ट्रेसन (1638–1749), मनोहर, दिल्ली, पृ. 12–15, नोर्मन वी. जिग्लर "सम नोट्स आज राजपूत लोयल्टी ड्यूरिंग दी मुगल पीरियड" दी मुगल स्टेट (1526–1750), (सं. मुज्जफर आलम व संजय सुब्रानियम, ओक्सफोर्ड प्रैस, दिल्ली, पृ. 180–187)
5. नैणसी री ख्यात, पृ. 69–70
6. यह घटना 1374 ई. में आसपास बताई जाती है। नैणसी री ख्यात– पृ. 69–72 रेऊः मारवाडा का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2002, पृ. 53–54 मल्लिनाथ वंश का इतिहास, पृ. 7–9
7. डॉ. पुष्पा भाटी, राजस्ज्ञथान के लोकदेवता एवम् लोक साहित्य, पृ. 54
8. पेमाराम, राजस्थान में भक्ति आन्दोलन, पृ. 56 ठा. नाहर सिंह जसोल, मल्लिनाथ वंश का प्रकाश डॉ. पुष्पा भाटी, राजस्थान के लोक देवता एवम् लोक साहित्य, पृ. 54 डॉ. दिनेश चन्द्र शुक्ल, राजस्थान के प्रमुख संत एवम् लोकदेवता, पृ. 14 जी. डी. शर्मा, राजपूत पोलीटी, पृ. 1–6 डॉ. पुष्पा भाटी, राजस्थान के लोक देवता एवम् लोक साहित्य, पृ. 55 म्लानी को राठौड़ों का हिन्डोला (पालना) कहा जाता है। क्योंकि कन्नौज छोड़ने के बाद यहीं से उनके भाग्य का सूर्य उदय हुआ है। मल्लिनाथ प्रकाशवंश, पृ. 13
9. नैनसी, विगत, भाग–1, पृ. 16 डॉ. पुष्पा भाटी, राजस्थान के लोक देवता एवम् लोक साहित्य, पृ. 55
10. रेऊरू मारवाड़ का इतिहास, भाग–1, पृ. 54
11. मल्लिनाथ प्रकाशवंश, पृ. 38–39 "मालौ किसौ हर री देह । हरबरसावे तो बरसे मेह ।।"
12. मल्लिनाथ प्रकाशवंश, पृ. 36–37, 38 पेमाराम, राजस्थान में भक्ति आन्दोलन, पृ. 56 डॉ. पुष्पा भाटी, राजस्थान के लोग देवता एवम् लोक साहित्य, पृ. 55 मल्लिनाथ प्रकाशवंश, पृ. 17 मल्लिनाथ प्रकाशवंश, पृ. 53
13. डॉ. द्वारकानाथ देव, राजस्थान के लोकदवेताः एक विहंगम दृष्टि, पृ. 62 हरजी भाटी, श्माल री महिमाः शोध पत्रिका, भाग–2 अंक 2, पृ. 84–86, 2006
14. जी. डी. शर्मा, राजपूत पोलीटी, पृ. 2–4

15. कहा जाता है कि मल्लिनाथ को अपना ठिकाना अपने चाचा कान्हड़ से छिनना पड़ा था। नैनसी री ख्यात, भाग–1, पृ. 55–56
16. इस सम्बन्ध में उपर्युक्त उल्लेख कैसे अपने चाचा की सेवा से जुड़े अपना हिस्सा प्राप्त किया आदि के सम्बन्ध में ख्यातों, विगत विरोधाभास परन्तु यह निशचित मल्लिनाथ ने अपना स्वतन्त्र ठिकाना की स्थापना।
17. डीर्क एच. ऐ. कोफ, ष्दी राजपूत आफ एन्सियंट एण्ड मिडिवल नोर्थ इण्डियाः ऐ वोरियर एसोसिटीक में फोक, फैथ एण्ड फयूडलीज्म, (सं.) एन. सिन्धी व राजेन्द्र जोशी, रावत, पृ. 257–294
18. डीर्क एच. ऐ. कोफ, उपरोक्त
19. मल्लिनाथ की पत्नी रूपांदे को आज भी मल्लिनाथ के समान सम्मन दिया जाता है तथा तिलवाड़ में इनका मंदिर है। विस्तार के लिए– मल्लिनाथ वंश प्रकाश, पृ. 14–16, 36–39 नैनसी, विगत, भाग–1, पृ. 16
20. रूपांदे का जीवन संगीत, मरु भारती, वर्ष 5 अंक 3, पृ० 16–25 डॉ० पुष्पा गाटी, राजस्थान के श्लोक देवता एवम् लोक साहित्य, पृ० –55 नैनसी, नैनसी री ख्यात, भाग 2, पृ० 284
21. जी.डी. शर्मा, राजपूत पोलीटी, पृ. 18–22